...ताकि हर व्यक्ति तक पहुंचे जल

जल के बिना जीवन संभव नहीं है। बढ़ती आबादी और खेती की जरूरतों के लिए जल की उपलब्धता भारत के लिए भी एक चुनौती है। इसी को ध्यान में रखकर केंद्र सरकार देश में भूगर्भ जलस्तर को सुधारने के लिए प्राथमिकता के आधार पर काम कर रही है। इसके लिए देश में बड़े पैमाने पर अमृत सरोवर स्थापित किए जा रहे हैं। इससे देश में भूगर्भ जल स्तर को ऊपर लाने में मदद मिलेगी। इसके अलावा पानी की कम खपत वाली फसलों जैसे मोटे अनाज की खेती को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

मिशन अमृत सरोवर

मिशन अमृत सरोवर योजना के तहत देश के हर जिले में 75 सरोवरों का निर्माण और जीर्णोद्धार किया जा रहा है। अब तक देश में 60,000 अमृत सरोवर बनाए जा चुके हैं और 50,000 सरोवर के निर्माण का कार्य प्रगति पर है।

2024 तक ग्रामीण घरों में नल से जल

भारत सरकार जल जीवन मिशन के तहत वर्ष 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण घर में 55 लीटर प्रति व्यक्ति प्रति दिन के सेवा स्तर पर पीने योग्य नल के पानी की आपूर्ति करने के लिए काम कर रही है।

दो लाख मौतें हो रहीं हैं सालाना

वर्तमान में 60 करोड़ लोग जल संकट का सामना कर रहे हैं और पानी की कमी या असुरक्षित जल आपूर्ति के कारण सालाना दो लाख लोग मौत के शिकार हो जाते हैं।

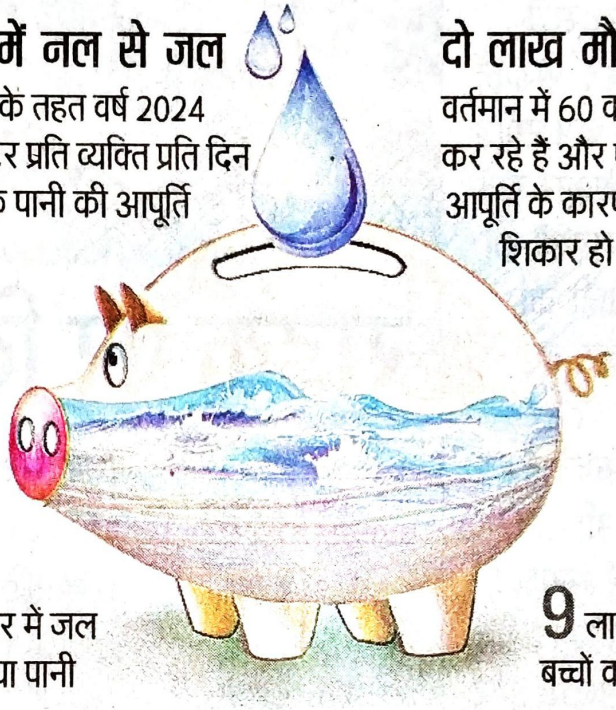

2,800 सार्वजनिक कुओं, तालाबों और पोखरों के जीर्णोद्धार का लक्ष्य रखा है 2024-25 तक बिहार नगर निगम एवं आवास विभाग ने

₹14,259 करोड़ खर्च हुए हैं रेन वाटर हार्वेस्टिंग पर

13 करोड़ से अधिक ग्रामीण घरों में आ रहा है शुद्ध जल

2 लाख से अधिक गांव के हर घर में जल जीवन मिशन के तहत पहुंचाया गया पानी

9 लाख से ज्यादा आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों को मिल रहा है शुद्ध जल

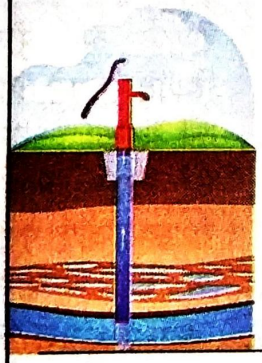

पंजाब में 50 लाख लोगों को होगा लाभ

पंजाब में भूजल स्तर गिरकर गंभीर स्तर पर पहुंच रहा है। पंजाब नगरपालिका सेवा सुधार परियोजना दो बड़े शहरों को स्थानीय नहरों जैसे जल स्रोतों पर जाने में मदद कर रही है। जल आपूर्ति में सुधार से 2026 तक 30 लाख से अधिक लोगों को और 2055 तक 50 लाख अनुमानित आबादी को लाभ होने की उम्मीद है।

नीचे चला गया है 2007 से 2017 के बीच भूजल स्तर अत्यधिक उपयोग की वजह से

82 करोड़ भारतीयों को नहीं मिल रहा पर्याप्त पानी

नीति आयोग का 2018 समग्र जल प्रबंधन सूचकांक (सीडब्ल्यूएमआइ) भारत में जल उपलब्धता की एक अस्थिर तस्वीर दर्शाता है। दुनिया की 17 प्रतिशत आबादी का घर होने के बावजूद, इसके पास दुनिया के मीठे पानी के संसाधनों का केवल 4 प्रतिशत है। भारत में पानी की कुल मांग 2025 और 2050 में क्रमशः 22 प्रतिशत तक और 32 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान है। वर्ष 2050 तक इस मांग का 85 प्रतिशत अकेले औद्योगिक और घरेलू क्षेत्रों से आने की उम्मीद है। क्षेत्रों में, दक्षिण और उत्तर-पश्चिम को अगले दो वर्षों में सबसे खराब स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। लगभग 82 करोड़ भारतीयों की प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता कम है। यानी उनको उनको उतना पानी नहीं मिल रहा है जितना उनको मिलना चाहिए।

120वें स्थान के साथ भारत जल गुणवत्ता सूचकांक में है सबसे निचले पायदान पर

पानी प्रदूषित है भारत में उपलब्ध जल स्रोतों का

nwda.gov.in